बि
स
र
बिसरल

★

श्री हंसराज

★

मैथिली साहित्य संस्थान
पटना–१

प्रकाशक :
मैथिली साहित्य संस्थान
पटना–१

विद्यापति-स्मृति-पर्व
८ नवम्बर, १९७३

मूल्य : एक टाका पच्चीस पाइ

मुद्रक
श्री कामेश्वर प्रसाद
कालिका प्रेस,
पटना–४

क्रमशः

राजकमल चौधरी

राजकमलक स्मृति मे, हुनक सम्बन्ध मे, हमरा विश्वास नहि अछि जे किछु लिखि पाएब। १९६७ इस्वीक १९ जूनकें अकस्माते हुनक देहान्त पटनाक अस्पताल मे भए गेलन्हि आ तकरा बादहिसँ एखनहुँ धरि हुनक मित्र वर्गादि द्वारा अनेक चर्चा देखैत आएल छी; इहो एकटा हुनक विशेषते हम मानैत छी। आ, हमरा अपनापर जे विश्वास नहि अछि तकर मूल कारण इएह जे कतोक स्मृति-खण्ड आँखिक सोझाँ तेना साकार अछि जे ओकरा सबकें अभिव्यक्त करबाक शक्ति नहि !

मैथिली साहित्यक आधुनिक युग मे १९५० इस्वीसँ १९५५ इस्वी मध्य जे जागरण भेल छल तकर प्रभाव एखनहुँ धरि स्पष्ट अछि। जगत् जननी मैथिलीकें प्रतीक मानि आधुनिक युग मे मिथिला भाषाक नाम जेना मैथिली कहल जाए लागल तहिना विद्यापतिक नामकें मैथिली साहित्यक विकासक प्रतीक मानल गेल आ ओहिसँ प्रेरणा ग्रहण करबाक लेल विद्यापति-स्मृति-दिवस जे मनाओल जाए लागल छल, से तावत धरि स्मृति सप्ताहक कोन कथा जे स्मृति पक्षक रूप धारण कए लेने छल।

मिथिलांचलक आन क्षेत्रक चर्चा हम नहि करब किन्तु मनीगाछी सँ तमोरिआ आ मधुबनी सँ बहेड़ा मध्य जे भू-भाग मे विद्यापति-स्मृति पक्ष

मनाओल जाइत छल तकरो कतोक शाखा-उप-शाखा छलैक आ एकटा शाखाक मूलत. नेतृत्व करैत छलाह श्री कांचीनाथ झा "किरण" आ, यथार्थ मे हमरालोकनि ओही शाखाक सदस्य छलहुँ ।

मिथिलांचलक गाम गाम शरदक साँझक इजोरिआ मे विद्यापतिक गीतक गायन सँ गुंजायमान रहैत छल । सम्पूर्ण मिथिलाक भूमि, मैथिल समाज आ मैथिली भाषाक विकास मार्ग अवरुद्ध देखि वृद्धलोकनिक स्वरमे क्षोभ आ युवक लोकनिक स्वरमे संघर्ष देखना जाए ।

'५४ इस्वीक शरद कालीन गप्प थिक । दरभंगा-निर्मली रेलवे लाइनक लोहना रोड स्टेशन सँ दक्षिण बसल गाम उजानक गढ़ टोल पर दए कें प्रायः नौ बजैत प्रातः दूटा युवक दक्षिणाभिमुख जाइत छलाह । प्रथम युवक नागदत्त, एही गामक आ, हुनकहि द्वारा हमरा दोसर युवक सँ परिचय कराओल गेल; फूल बाबू अर्थात् मणीन्द्र नारायण चौधरी, पैतृक वासस्थान बनगाम महिसी (सहरसा)। नागदत्तक भागिन दिवानाथक सहपाठी । साहित्यिक रुचिक लोक !

ओएह फूल बाबू अर्थात् मणीन्द्र नारायण चौधरी क्रमशः मणीन्द्र राजकमल, राजकमल आ राजकमल चौधरी भए गेलाह ।

ओहि खेप राजकमल उजान गाम मे पन्द्रह दिनुक अन्दाज रहल छल होएताह । ओहि मध्य ओ हमरालोकनिक संग गाम भरिक सब मुख्य स्थान बड़ उत्सुकता ओ प्रसन्नतापूर्वक जाए कें देखलन्हि जाहि सब मे एखनहुँ हमरा स्मरण अछि जे गामक दुर्गास्थानक चबुतरा पर बैसल छलाह, गामक पच्छिम कमलाक कछेर मे बौअएलाह, छिन्नमस्ता भगवतीक दर्शन कए मुग्ध भेल छलाह आ गामक पूर्वीय सीमा पर विष्णुभवन जाए कें चकित भेलाह, बलानक गहीँर पेट देखि चौंकल छलाह आ गामक उत्तर सीमा पर बाबा विदेश्वरक दर्शन कएलन्हि, बीचक दुनू कठपूल पर घण्टाक घण्टा भरि बैसि कमलाक कछेर सँ अबैत पछबा पिबैत, लोहनारोड स्टेशनक प्लाटफार्म तँ मुख्य सुस्तएबाक स्थल । आ, प्रातःकाल नागदत्तक ओहिठाम हमरालोकनिक

मुख्य बैसार होइत छल। एहि बीच हमरालोकनिमे साहित्यिक चर्चा तँ होइतहि छल जे ओ मैथिली रचना दिस सेहो ओतहि प्रवृत्त भए गेलाह आ मूल मैथिली रचनाक अतिरिक्त अपन कतोक नीक नीक हिन्दी रचनाक मैथिली अनुवाद ओतहि कएलन्हि। यथार्थं मे मैथिली साहित्य मे प्रवेश करबाक प्रेरणा हुनका उजानहि मे भेल छलन्हि आ ओ आजीवन ओकरा नहि बिसरि सकलाह जकर प्रमाणस्वरूप हुनक कतोक हिन्दी-मैथिलीक रचना अछि।

आ, एहि बीचमे विद्यापति-स्मृति-पक्षक अवसर मे हमरालोकनिक संग तीन ठाम सेहो ओ सम्मिलित भेलाह। पहिल उजान, दोसर लोहना आ तेसर सरिसव। ओहि सम्मेलन सब मे पाठ कएल हुनक कविता "नागरी-उषा" दूटा पाँती हमरा आइओ मन अछि। नगरमे प्रात भेल अछि—

"जेना कोनो बकलेल राड़िन
माँजि थारी
फकि देलक नील पोखरि मे।"

आ, नगरक उषा केहन—

"कोनो बहुआसिनक हाथेँ माँजल पीढ़ी जेहन।"

आ, मन नहि अछि जे ओ हमरा गाम सँ कोना चल गेलाह। किन्तु हमरा एतबा स्मरण अछि जे हुनक संग दू टा बेस मोट कापी रहन्हि, हरिअर गत्ता, ऊपरमे पूर्ण कलाकारिता सँ लिखल—"मणीन्द्र राजकमल।" ओहि कापी सब मे हिन्दी आ मैथिलीक कविता सब लिखल छलन्हि। ओहि सब कविताक प्रसंग ने हुनका हम तकर बाद कहिओ पुछलिऐन्हि आ ने ओ सब कहिओ कतहु प्रकाशित देखलिऐक। "वह आती है नित कालेज" आ, "अम्मी जाँ अब हाथों में तस्वीह लीजिये" हुनक दूटा कविता नहि बिसरैत छी।

एहि एक पक्षक सम्पर्क मे हम देखलहुँ जे राजकमल मातृहीन, घरक निकलुआ, परिवार सँ अनासक्त, भ्रमणशील, अपन बाँहिक सामर्थ्यपर आस्था रखनिहार, तर्कवादी, घनघोर नास्तिक संगहि नाना प्रकारक व्यक्तिक संगति-

कुसंगति ओ अनेक प्रकारक स्थिति मे रहबाक कारण मनुष्य जाति जतेक प्रकारक दुर्व्यसन अछि, यथा सम्भव ओ सबक अभ्यासी छलाह।

"वैदेही"क कथा-विशेषांक (नवम्बर-दिसम्बर १९५५) मे प्रकाशित भेल राजकमलक "ललका पाग"। एहि सँ पहिनहुँ हुनक कथा आ कविता "वैदेही" मे प्रकाशित भेल छल जाहि मे मुख्यतः (जे हमरा स्मरण अछि) "शशि-उर्वशी" कविता आ "अपराजिता" कथाक अतिरिक्त "पटनियाँ टट्टूक प्रति (कविता), अन्धकार (कथा) आ "फुलपरास वाली" कथा (श्री ललितक कथा 'मुक्ति"क उत्तर स्वरूप) प्रकाशित भए गेल छल। किन्तु "ललका पाग" मैथिली साहित्यक लेखक-पाठक केँ चौंकाए देलक आ "राजकमल के थिकाह" सर्वत्र प्रश्न होअए लागल। मणीन्द्र राजकमल "ललका पाग"क संगे राजकमल भए गेलाह।

तकर बाद राजकमल सँ हमरा भेँट भेल ओकर ठीक एक वर्षक बाद। '५५क शारदीय दुर्गापूजाक अन्दाज। हम दरभंगा छलहुँ। स्मरण नहि अछि जे कोना ज्ञात भेल जे राजकमल आयल छथि। श्री ललित बाबूक वासापर रुकल होएताह। हुनक वासा मिर्जापुर मे रहन्हि। अन्दाज चारि बजैत अपराह्न हम पहुँचलहुँ श्री ललित बाबूक वासाक ओसरा पर। तक्थपोश पर राजकमल निन्न भेर। कात मे राखल कुर्सीपर हम बैसि रहलहुँ। किछुए क्षणक बाद ओ निद्राच्युत भेलाह। वैयक्तिक, सामाजिक आ साहित्यिक चर्चा संक्षेप मे भेल। तावत अएलाह ललित बाबू। हमरा हुनका सँ परिचय कराओल गेल। यद्यपि ललित बाबू हमरा आ हम हुनका चिन्हैत छलिएन्हि मुदा कहिओ परिचयात्मक गप्प नहि छल।

साँझ पड़ए लागल आ हम बैसले रहलहुँ। राजकमल बहराएबाक चेष्टा कएलन्हि। विदा होइत-होइत श्री मायानन्द मिश्र, श्री जयानन्द आ श्री उमानन्द सिंह झा जुटलाह। षट्मूर्त्तिक एकटा पाँती मंथर गतिएँ चलल। लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरी; ततःपर माधवेश्वरक पोखरिक पछबरिआ सीढ़ीक पाया।

आ, ई क्रम प्रायः भरि पूजाक अवकाश छल। आ, ओही क्रम मे महाष्टमीक राति कटहड़बाड़ीक दुर्गा स्थान सँ कोनो बंगला नाटक देखि हमरा-लोकनि फीरल छलहुँ। चौबट्टी पर केओ पुजने छलि; से एकटा नारिकेर पड़ले रहैक। राजकमल नारिकेर उठाए लेलन्हि। प्रातखन जखन हम पहुँचलहुँ तँ ओहि नारिकेरक एकटा टुकड़ी हमरा ई कहि ओ देलन्हि जे ओकर नीक-अधलाहक भागी हमहूँ छी जखन ओहिमे हमहुँ सम्मिलित छलहुँ।

राजकमल, रामकृष्ण मिशन लेन, पटना—४, १७। ५। ५६ प्रिय हंस राज, काल्हि अहाँक पत्र भेटल। नहि आबि सकलहुँ। आलस्य आ छुट्टी नइँ भेल। एतदर्थ क्षमा चाही। अहाँक गल्पादि वैदेही मे पढ़ि अतीव प्रसन्नता होइतछि। शेष कुशल। राजकमल। १७। ५

नागदत्तक की हाल? अहाँ इम्हर की की लिखने छी? आ, की कऽ रहल छी? राज……

आ, एही बीच राजकमल पटना, ललित छपरा, उग्रानन्द आ जयानन्द सेहो दरभंगा सँ प्रायः बाहरे आ, हम चल गेलहुँ कटिहार।

रामकृष्ण मिशन लेन, पटना—४

प्रिय हंसराज, हम आइए बीस-पचीस दिनक महायात्रा (हरिद्वार, ऋषि-केश, बदरीनारायण) सँ घुरल छी। तइँ पहिने पत्रोत्तर नइँ दऽ सकलउँ, क्षमा करब। मैथिली लेखक-सम्मेलन मे जएबाक यत्न हम करब। अहूँ आउ ने। गल्पादि लीखब जुनि छोड़ू। मन्द नइँ, सतेज। भेँट कहिआ हएत? एतद्धि। राजकमल। ६। ८

राजकमल, रामकृष्ण मिशन लेन, पटना—४, १८। ८। ५६

प्रिय हंसराज, उत्तर मे विलम्बक कारण, वैद्यनाथ गेल छलउँ……। सम्मेलन प्रो० श्री कृष्णकान्त मिश्रक अस्वस्थताक कारणेँ नइँ भऽ सकल। मायानन्द साएत दड़िभंगे छइथ। ललित उत्तर दइ मे महा-आलसी। अहिना किछु लिखने छी—गल्पादि। कटिहार तँ बड़ पइघ अउद्योगिक नगर छइक।

ओत' के जन-मजूर, निम्न वर्गाविक लोक-वेब, पानवला, रिक्शावला, आदि समक जीवन कें लग सँ, निहारिक' देखबाक यत्न करू तखनहि जीवनक सत्य आ गल्पक सत्य दुनू प्राप्त भऽ सकत। ओना अनुभव-रहित कल्पना ग्रस्त कथा लिखबाक कोनो फल नइँ। श्री यात्री एखन छइथ इलाहाबाद मे। आ, हंसराज, एहि जीवनक उद्देश्य थिक मात्र ज्ञान-प्राप्ति आ ज्ञान-वितरण। से प्राप्तिक जे माध्यम हो, 'विष वा विषया" पएबामे कोनो कोताही जुनि करब। हम कुशल छी। पत्र देल करू। राजकमल। १८। ८

रामकृष्ण मिशन लेन, पटना-४, १०-११-५६

प्रिय हंसराज, गत डेढ़ मास सँ हम पटना नइँ छी। पुनः हिमालय-यात्रा पर गेल छलउँ। जम्मू स्टेट (काश्मीर) मे एकटा वइष्णव देवीक स्थान छइन। ओत्तइ पड़ाएल छलउँ एहि बेर। काल्हि पटना अएलापर अहाँक पत्र भेटल।

सम्प्रति अठारह-उन्नैस नवंबर कें दड़िभंगा मे मैथिली साहित्य सम्मेलन भऽ रहल अइछ। हम अवस्स जाएब। अहूँ आउ ने ?

हम सतरह नवंबर राति मे दड़िभंगा (ललितक वासा पर) पहुँच जाएब। एतद्धि ! नव जे किछु लिखने छी दड़िभंगे नेने आएब। राजकमल। १०-११

एहि बीच वर्ष दिन सँ ऊपरक हमरा राजकमलक कोनो पत्र उपलब्ध नहि भऽ रहल अछि। मने नहि पड़ैत अछि। हँ तीन टा कथा धरि स्मरण अछि। "कृष्ण भक्त कथा" (वैदेही फरबरी '५७) आ श्री कल्पनाशरणक, कथा "रंगीन परदा" वैदेही मे प्रकाशित भेल छल। ओ पढ़ि ओ लिखने छलाह—"फ्रेंच उपन्यासकार एमाइल जोलाक उपन्यास 'लज्जा" स्मरण भऽ गेल। पर-पुरुषरति सभ युग ओ सभ देशक कथाक मुख्य विषय थीक। पर-रति सुन्नरि ओ सउभाग्यवती नारीक आभूषण थीक—सउँसे भारतीय धर्म आ साहित्य विदग्धा राधा-रानीक पर-रति कथा सँ भरल अइछ··· मुनिकन्या अहिल्या, स्पार्टाक महारानी हेलेन, इजिप्टक महासुन्दरी क्लियोपेट्रा, टालस्टायक महानायिका अन्ना केरेनिना, फ्लावियरक आकांक्षयी मादाम बोवेरी, शरच्चन्द्रक

किरणमयी आ कल्यानाशरणक मालती...मुदा, पररति आ फेर पतिक मृत्युक पश्चात स्नेही मोहन सँ विरक्तिए टा मात्र मालतीक कथा नइँ...ओतवा कथा तँ ओोहि महाकथाक मात्र पूर्वाभास थीक, जे महाकथा सउँसे समाज मे, सउँसे देस मे, सउँसे संसार मे प्रतिदिन लिखल जा रहल अइछ।" आ, हरिद्वार-बास वैदेही रंगीन परदाक आगाँक कथा प्रायः (मई '५७) मे प्रकाशित भेल आ दोसर कथा मन पड़ैत अछि "बाबू साहेबक ठीक" (वैदेही जुलाई '५७) एकटा व्यंग्य-कथा!

द्वारा मिथिला दर्शन, १६/बी० नरेन्द्र सेन स्कायर, कलकत्ता—९, १२-१२-५८। माइ हंसराज, हमरा भान नहि छल जे एखन धरि अहाँ कटिहार हएब। तइँ एहि पताक उपयोग नइँ कएलउँ। अहाँ सँ पत्र-व्यवहार छूटि गेल छल। हम बरख-दू-बरख हिमायन कएलउँ-कैलाश—सुमेरु सँ हरिद्वार धरि। आब स्थिर रूपेँ कलकत्ता रहबाक निर्णय अछि।

'मिथिला दर्शन' अप्पन साहित्यजीवी केँ जीवित रखबाक माध्यम रखने छी। हमर उपन्यास "पाथर-फूल" आ कविता-संग्रह "स्वरगन्धा" दू-तीन सप्ताह मे अहाँक सेवा मे पठाएब। मुख्यतः एतवे इम्हर लिखने छी—गल्पादिक अतिरिक्त।

अहाँ अतिशीघ्र अप्पन एकाध-टा गल्प आ दू-तीनटा कविता-मिथिला-दर्शक'क लेल पठा दिअ। ई हमर निवेदन आ प्रार्थना।

आर सभ कुशले जकाँ अछि। जँ भऽ सकए तऽ अप्पन विसरल समाचार लिखू। कोनाँ की कए रहल छी। जीवन-पथपर कतेक आगू बढ़ल छी। आदि आदि। सम्प्रति 'मिथिला-दर्शन' (जनवरी) पठा रहल छी। फरवरी अंक सप्ताह धरि पठाएब। पत्र अवश्य दइत रहू। एतद्धि। अहाँक श्री राजकमल १२-२।

'दर्शन' १६/बी० नरेन्द्र सेन स्कायर, कलकत्ता-६, २७-३-५८

माइ, अहाँक कार्ड। आश्चर्यक विषय जे अहाँक कविता एखनधरि नइँ भेटल अछि। हमरा तँ होइ छल जे अहाँ हमरा बिसरि देलउँ—हमहुँ अप्रीलक

अन्तधरि (सायत) दरभंगा जाएब। ब्राह्मणी उम्हरे छथि एखन। कोन गाम, कोन परिवार मे बिम्राह कए रहल छी? एतेक हड़बड़ा किम्रए गेलउं? एखन तँ बेसी बएसो नइँ भेल अछि। कृपया रचनादि पठाउ। नइं हो तं रजिस्टर्ड सँ पठा दिय—कविता, गल्प, कथा, लेख, संस्मरण आ व्यंग्य। बेसी कथादि 'दर्शन' केँ चाही। नीक आ स्वस्थ आ रमनगर कथाक बड्ड अभाव अछि। एकटा विस्तृत पत्र (कम सँ कम दस-बारह पेजक अपना विषय मे सभ समाचार सहित) दिय। एतद्धि। राजकमल

राजकमल चौधरी, दर्शन, १९/बी० नरेन्द्र सेन स्कायर, कलकत्ता—९, १२-४-५८

प्रिय हंसराज, पत्रोत्तर देबा मे देरी भेल, एहि हेतु क्षमा प्रार्थनाक अतिरिक्त कोनो शब्द नइँ भेट रहल अछि। गप्प ई भेल जे अपना एकटा अभिभाविकाक संगे हम जगन्नाथपुरी चल गेल छलउँ, अकस्माते। काल्हिए घुरल छी..., यात्राक व्यवस्था कारनेँ ज्वर भए गेल अछि ...अत्यन्त थाकल आ आ श्रान्त छी...।

अहाँक पत्र आ संलग्न कविता प्राप्त भेल। हम अहाँ सँ गद्य-रचनाक आशा करैत छलउँ...आशा करैत छी अग्रिम बेर गल्प अहाँ पठाएब।

वैदेही (मार्च अंक) मे अहाँक एकटा गल्प पढ़लहुँए...कथानक लन्दन नगर सँ संबंधित अछि। कथा हमरा पसिन्न भेल...मुदा, हमारा विचारेँ आजुक कथाकार केँ अनुमानित सत्य सँ बेसी, अनुभूत सत्य पर धेम्रान देबाक चाही... जखन अपना चतुर्दिक कोनो घटना, तथ्य, कोनो सत्य, कोनो चरित्र, कोनो वातावरण नइँ भेटए, तखनइँटा कथा मे काल्पनिक स्थान-घटनाक आश्रय लेबाक चाही। एतद्धि।

अहाँक विस्तृत पत्र पाबि मोन तृप्त भेल। मोन अधिक तृप्त होएत, जखन अहाँ जे जे वस्तुक ज्ञान अनुभव एहि तीन-चारि बर्खक अव्यस्थित सन जीवन मे कएने छी, तकरा सभ केँ अपन रचनादि मे समेटि सकी। आर्थिक अव्यवस्था, सामाजिक अनास्था, मानसिक अश्रृंखला मे बिताओल समय

गल्पकार आ कविक लेल सभ सँ महत्त्वपूर्ण होइत अछि—एहने संक्रान्ति काल आ संक्रमण काल मे कलाकार अपन ग्रहणशक्ति आ अनुभूति कें माँजि सकइए, सान चढ़ा सकइए...। ओना हमर व्यक्तिगत विचार जे अहाँक प्रतिभा मे गद्यकार हेबाक तत्त्व कवि हेबा सँ बेसी अछि। अहाँ अपन रचना क्रमशः हमरा पठाउ" ध्यान पूर्वक पढ़िकए हम अपन व्यक्तिगत विचार अवश्य देबाक चेष्टा करब। हमर मातृक पुर्नियाँ अछि...कटिहार (१९४७ सँ ५० धरि) कतेक बेर गेल छी; आ एक दूबेर मास मासधरि रहलो छी। कटिहार औद्योगिक नगर अछि, जीवनक बड़ विभिन्न प्रकार आ 'टाइप' ओहिठाम हमरा देखबा मे आएल छल...एकटा कथा "अन्हार" सेहो वैदेही मासिक मे कटिहार सँ संबंधित लिखने छलउँ। अहाँ एहि नगर सँ की की प्राप्त कएने छी? कएक टा गद्य लिखने छी? आदि आदि।

विवाह अहाँ एखन नइँ करितउँ, से अधिक उत्तम छल। की अहाँक वाग्दत्ता जीवनक सभ क्षेत्र मे अहाँ संगे आगू बढ़ि सकतीह? आ की अहाँ कें पाछू घिचबाक सतत प्रयत्न मे संलग्न रहतीह?

अंगरेजी-साहित्य दिस रुचि अहाँक जागल अछि ई एकटा बड्ड महत्त्वपूर्ण घटना थीक। पुरान क्लासिक साहित्य नइँ पढ़ि, अहाँ अति आधुनिक साहित्य पढ़ू। विलियम फॉकनर, हेमिंग्वे, जॉन स्टेनवेक, विलियम सरोयाँ, ज्याँ पाल सात्रे, अलवर्ट मोराविया आदि गद्य मे आ इलियट, पो, एमिली डिकिन्सन, डोरोथी पार्कर, नोरमा फेरबर, मुरी नौस, मे स्वेन्टन, थियोडोर रोके आदि पद्य मे। 'मिथिला दर्शन'क लेल विदेशी कथा सभक अनुवाद, अपन गद्य रचनादि पठाउ। हमर प्रकाशित पुस्तक सभक सम्प्रति एक्को प्रति हमरा संग मे नइँ अछि। संभवतः एहि मासक अन्तधरि हम अपन दूटा पुस्तक अहाँ कें पठा सकब। जेहन आशा अछि, हम सौराठ सभाक समय दरभंगा-दिश जा सकब। पहिली मइ कें दरभंगा पहुँचब असम्भव अछि...जीवन मे आर्थिक व्यवस्था अनबाक सरंजाम मे व्यस्त, अतिव्यस्त छी। आब एहि इनलैंड मे जगह नइँ बाँचल अछि...अस्तु। कृपया पत्रक उत्तर दिअ। राजकमल। १२-४-५९

प्रायः २२-६-५८क राति। लहेरियासराय स्टेशनक प्लेटफार्म पर हम आ हमर प्रिय मित्र डाक्टर श्री सत्यनारायण राय उतरल छलहुं। अकस्माते राजकमल आगां मे ठाढ़। "ककरा" तकैत छी बन्धु?" प्रश्नक उत्तर मे हमरा सँ कहाए गेल—'अहीं कें'। कतए सँ?"—"सकुरी मे चढ़ल रही।"—"देखलहुं नहि? हम तँ दरभंगा प्लेटफार्म पर एकबेर बौआएल छलहुं।"—"उचिते नहि देखल। हमरा तँ लेडीज सेकेण्ड क्लासक उपरका बर्थ रिजर्व छल।" आ, हमरालोकनि हँसैत गेलहुं। हास्य मन्द भेल तँ ओ तौलिआ मे लपेटल मोटरी सँ एकटा पोथी बहार करैत कहलन्हि—"इएह लैह 'स्वरगन्ध'। पढ़िहह आ किछु लिखिहह। आ, तोहर गाड़ी चलि देलथुन।"

चानपूरा, १३-७-५८

हंसराज! प्रिय बन्धु!! आइ कलकत्ता जा रहल छी। तोहर कार्ड भेटल छल। तखन उत्तर नहि दए सकलउँ…व्यस्तता…यात्रा…दिमागक ठेही। तों विस्तृत पत्र लिखह। पत्रे टा नहि, रचनादि सेहो।

"स्वर-गन्धा" पर सविस्तर विचार पठाबह। नागदत्त सँ भेंट नहि भए सकल।…एक बेर कटिहार अएबाक मोन अछि। दिसम्बर मे आएब। ओही ठाम सँ दार्जिलिंग, कालिम्पोंग मे राहुल बाबाक सासुर छनि। जलपाइ गुड़ी…शिलांग…डिब्रूगढ़। तीन मासक यात्रा रहत। संग देबह?

आब उपन्यास 'पारवती-मठ' (हिन्दी) मे लागल छी। तों अपन लिखह। राजकमल। १३-७

"क्रान्तिक गीत गउनिहार कविक निराला जकां तिरस्कार-भर्त्सना भेटिते छइक किन्तु दृढ़ संकल्प सँ युगद्रष्टा एवं युगस्रष्टा वएह बनइत अछि, जे गरल-पान नइं करत से संसार कें सुधादान कोना दऽ सकत? तएँ जँ अन्ध प्रवृत्तिक लोक 'स्वरगन्धा' कें 'दुर्गन्धा' कहइ छथीन तँ आश्चर्य नहि, किन्तु एक दिन एहनो हेतइ जे दिन एहि युगद्रष्टा कविक समाज मे सम्मान भेटतइ।…आ राजा (राजकमल) भाइ, अन्त मे हम एतबे कहब जे मैथिल

पाठक एतेक कठोर स्पष्टोक्ति सुनइक सामर्थ्यं नइँ पउलकए आ ई पढ़बाक लेल समर्थ नइ अइछ। अहीँक हंसराज।" (वैदेही अक्टूबर १९५८)

उपरिलिखित पाँती "स्वरगन्धा"क सम्बन्ध मे जे हम पत्र रूपक लेख राजकमल केँ लिखने रहिऐन्हि तकरे अन्तिम अंश थिक। एकर उत्तरस्वरूप ओ एकटा विस्तृत पत्र हमरा लिखने छलाह जे आर कतोक पत्र जकाँ उपलब्ध नहि अछि।

राजकमल चौधरी, भारतीय ज्ञानपीठ, साहू जैन निलय, ९, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता—२७, २८-१०-५८

प्रिय हंसराज, तिथि ८-१०-५८क पत्र काल्हि सायंकाल भेटल अछि। स्वरगन्धा संबंधित अहाँक लेख मि० द० नवम्बर अंक मे जा रहल अछि। पत्र गत सात मास सँ बन्द छल। अक्तूबर अंक बहराएल अछि। आब बराबरि बहराएत। हम मि० द० सँ (आब) कोनो तरहेँ सम्बन्धित सम्पर्कित नहि छी। कारण, समय नहि अछि। हम भारतीय ज्ञानपीठ मे पुस्तकादि-सम्पादन कार्य कए रहल छी। पत्र व्यवहारक पता यएह थीक। अहाँ पीताम्बर जी (भागलपुर) केँ सूचित कए सकैत छिअैन।--प्रिय राय जी केँ हमर नमस्कार सूचित कए देबैन। राजकलल चौधरी।

आ, एहि बीच राजकमलक सम्बन्ध मे मैथिलीक संयत पाठक आ लेखक लोकनि मे एकटा असंतोषक लहरि लहराएल जकर मूल कारण छल 'स्वर-गन्धा'क प्रकाशन, मलाहक टोल: एकटा चित्र (वैदेही अगस्त '५८) हाथीक दाँत (मिथिला दर्शन) कमलमुखी कनियाँ (कथा-पराग) आ, एकटा आर कथा (वैदेही १९६०) किन्तु नाम स्मरण नहि)। एहि सभक सन्दर्भ मे राजकमलपर वीभत्सता, अनैतिकता आ साहित्यक मर्यादाक भंग आ उच्छृंखल-ताक आरोप लगाओल गेल छल। यद्यपि एकरा सभक उत्तरस्वरूप ओ "अन्हार घर सापे सापे" (वैदेही) आ "तथाकथित परम्परावादीक प्रति (मिथिला दर्शन, जुलाइ-अगस्त '५९) लिखने छलाह किन्तु परिणाम ई भेल जे हुनका मैथिली लिखब छोड़ि देबए पड़लन्हि से फेर ओ '६३क सितम्बर सँ

आरम्भ कएलन्हि। एहि बीच मे हुनक प्रायः तीन टा रचना मात्र अछि—देश अहीँक थीक (अभिव्यंजना-१, '६० कविता) 'समय : एकटा आन्हर साप' (मिथिला मिहिर, ३-२-६३ कविता) आ "आकाश गंगा" (मि० ब० कथा)

राजकमल चौधरी, ६/१ बामन पाड़ा लेन, कलकत्ता—१९

हंसराज, कार्ड भेटल। पैघ पत्र नइँ लिख रहल छी। व्यस्तता आ मानसिक उद्वेग—। नव वर्षक शुभकामना स्वीकार करू। (१) 'मैथिली की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ' हिन्दी-संग्रह प्रकाशित भए रहल अछि। अप्पन प्रकाशित मैथिली कहानी (तीनटा) हिन्दी अनुवाद कए शीघ्रतः दस जनवरी सँ पहिने पठा दिअ। अहाँक रचना, संग्रह मे जाए, से हमर तीव्र इच्छा। मुदा अनुवाद अहीँ पठा दिअ। समय नइँए—तइँ ई अनुरोध कए रहल छी। (२) अहाँ दू तीनटा कविता आ एकटा कहानी (हिन्दी) पठा दिअ। एकटा हिन्दी मासिक पत्रक सम्पादन कए रहल छी—तकरा लेल चाही। राजकमल। १-१-५९

राजकमल चौधरी, ६/१ बामन पाड़ा लेन, कलकत्ता—१९

भाइ, भसिआएले भसिआएल छलउँ, तइँ पहिने पत्र नहि देल। आइ तोहर पत्र पाबि मोन फड़ीछ भेल अछि। दू तीन दिन मे 'आदि-कथा' पठाएब। गया कतबा दिन रहबाक विचार कएने छी? किअए? तोहर रचना मैथिली की प्रतिनिधि रचानाएँ। मध्य गेल अछि। शशि, तोहर भउजी एहीठाम छथि। गया कालेज मे हमर अभिन्न बन्धु सुरेन्द्र नारायण चौधरी प्रोफेसर छथि। अवश्य भेँट करब। नीक लोक छथि, अध्ययनशील आ पण्डित।

आर की हाल? उपन्यासक पाण्डुलिपि पठाउ। आर की की लिखइ छी? हम आइकाल्हि हिन्दी मे लागल छी। तोहूँ हिन्दी मे आबह। मैथिली मे अभिव्यक्तिक माध्यम कहाँ छइ? विशेष की…। राजकमल, २८।४।५९

राम कुटीर, पुरवा-पुतियारी (पियारा बागान) कलकत्ता-३३ प्रिय हंसराज, अहाँ अनायासे उगइत छी, अनायासे डूबि जाइ छी। ई छन्दहीनता कखनउँ हमरा नीक लगइए, कखनउँ अधलाह। एखन धरिक हमरो जीवन एहने रहल अछि। दरभंगा-पटना-दिल्ली-मसूरी। तकरा बाद ई कलकत्ता।

पारिवारिक जीव हम-अहाँ नइँ छी। मुदा बताह-विक्षिप्तो नइँ छी जे अकारण बउआइत रही—जनसागर मे भसिआइत रही। ई सत्त जे हम सभ असाधारण लोक छी। साधारण लोकक दिनचर्या-जीवन-चर्या हमरा सभक लेल नईं। तखन एकटा गप्प आर अछि—हमर पत्नी, अहाँक पत्नी, आ, आर्थिक समस्या। स्वेच्छा सँ विआह कएने छी तइँ पत्नी कें संगे राखि, अपना संगे बउआइत रहबाक उपयुक्त बनाउ। से नइँ हो, आ बउआएब अधिक जरूरी बुझना जाए तँ पत्नीक परित्याग कए भगवान बुद्ध बनि जाउ। दूति उपदेशः। हम आ शशिकान्ता कलकत्ते छी। आब कतेक वर्ख धरि अही-ठाम रहब। जीविकाक कोनो उपयुक्त साधन नइँ अछि मुदा एतवा उपार्जन अवश्य अछि जे भोजन वस्त्र गृह व्यवस्था होइए आ पढ़बा लिखबाक समय भेटइए। पढ़ब-लिखब जीवनक उद्देश्य अछि। सभ दिन छल, सभ दिन रहत।

"मैथिली की श्रेष्ठ कहानियाँ" श्री सोमदेव सेहो प्रस्तुत कए रहल छथि। हुनका सँ पत्राचार कए दुनू गोटे एके संग्रह बहार करू, सएह उत्तम हएत। ······हमरा जहिआ कहब हम अपन अनूदित कथा पठा देब। अप्पन सभ समाचार विस्तार पूर्वक लिखू। संभव हो तँ कहिओ एकबेर कलकत्ता आउ। अहाँक जीवनधारा उचित रूपें प्रवाहित नइँ भए रहल अछि। एतद्धि। सस्नेह राजकमल १९-११-५९

राम कुटीर, पियारा बागान, पुरवा-पुतियारी, कलकत्ता-३३

प्रिय हंसराज, सुविस्तृत पत्र पाबि प्रसन्नता भेल। 'बउअएबाक प्रवृत्ति' सँ हमर अर्थ केवल स्थान परिवर्त्तन नहि छल, अकर्मण्यता सेहो छल। तों कोनो दिशा मे स्थायी रूप सँ किछु करबह तँ हमरा सत्ते बड़ प्रसन्नता हएत। शशिकान्ता कें तोहर नामे टा नहि, परिचयो बुझल छनि। "मैथिली की श्रेष्ठ कहानियाँ" मे हमर जे रचना पसिन्न आबह, अनुवाद कए लएह। हम एखन अनुवाद नहि कए सकब। भरि दिसम्बर एको पंक्ति लिखबाक इच्छा नहि अछि। जँ, अपराजिता, कोपड़, महालक टोल, फिरणमयी (सभ वैदेही मे प्रकाशित) मे सँ कोनो गल्प अनुवाद करबह तँ नीक। उग्रानन्दक 'सुरनी'

अवश्य इन्क्लूड करह। यात्री जीक जे रचना मोन हो, अनुवाद कए लएह। उत्तर देबा मे ओ बड्ड असकतिआह छथि।...आदि कथा पठा रहल छिग्रह।...

माइ, हमरा विचारें मनुष्य जातिक सभ सँ महान उपलब्धि थीक संस्कृति। एहि चारि हजार वर्खक जीवन-संघर्ष मे मनुष्य संस्कृतिक अतिरिक्त आन किछु नहि पओने अछ। संस्कृति माने की ? संस्कृति माने सुन्दर जकाँ रहनाइ। आदि मनुष्य सुन्दर जकाँ नहि रहैत छल। स्वाभाविक जकाँ रहै छल। हिंसा, घृणा, लोभ आदि स्वाभाविक भाव अछि। संस्कृति एहि भाव कें परिष्कृत कए, अहिंसा, प्रेम आदि उत्पन्न करइए। कला संस्कृतिक सभ सँ विशिष्ट उपलब्धि अछि। कला द्वारा लोक-मानस मे सौंदर्यक उत्पत्ति होइत अछि। सौन्दर्य कें बूझि सकबाक सामर्थ्य मनुष्यक सभ सँ पैघ सामर्थ्य अछि। संस्कृति सँ कला, कला सँ सौन्दर्य, सौन्दर्य सँ रसानुभूति, रसानुभूति सँ जीवन मुक्ति प्राप्त होइत अछि। एहि मे के पइघ के छोट ? संस्कृति आ कलाक सम्बन्ध अटूट। संस्कृति द्वारा जीवन सुन्दर बनइए। कला द्वारा मोन सुन्दर बनइए। जीवन आ मोन मे के पइघ के छोट ? जे साधारण मनुष्य अछि, समाजजीवी, धर्मजीवी आदि, तकरा लेल संस्कृति। जे असाधारण मनुष्य अछि, आत्मजीवी, सौन्दर्यजीवी तकरा लेल कला। मुदा, जें लोक संस्कृत नहि अछि, तें ओ कला-निर्माण नहि कए सकइए। संस्कृति जीवनक प्राथमिक पाठशाला थीक। कला उच्चस्तरीय शिक्षा। मुदा, प्रश्न ई नहि थीक। प्रश्न ई थीक जे संस्कृति आ कला, दुनूक मध्य जे रस अछि, काव्य अछि, लय अछि, संगीत अछि—जे सौन्दर्य अछि,—पहिने तकरा बुझब परम आवश्यक अछि। जे व्यक्ति सौन्दर्य नहि बुझइए, तकरा लेल एहि दुनूक अर्थ नहि। जे नीक लागए, से सौन्दर्य नहि थीक। जकरा नीक बुझबाक चाही, से सुन्दर थिक। दोसर गप्प ई जे वास्तव मे सौन्दर्य अछि नहि, अपितु हम बुझैत छी जे सौन्दर्य अछि तें सौन्दर्यक कोनो वस्तु मे स्थापना होइत अछि। सौन्दर्य बुझबाक हमर-तोहर एहि क्षमता मे बुद्धि, अध्ययन, ज्ञान, प्रतिभा, सहनशीलता आदिक उच्चतम मिश्रन आवश्यक अछि। बिना रसज्ञ भेनें सौन्दर्य बूझब असम्भव। बिना रसज्ञ भेनें संस्कृति आ कला बूझब असम्भव।

एहने कतेक गप्प एहि विषय मे कहल जा सकइए। सविस्तर पत्र मे कहब असंभव, एहि पर तँ निबन्ध लिखल जा सकइए। अन्त मे हम एतबे कहए चाहब जे कला आ संस्कृति मे हमरा तोरा लेल सभ सँ पैघ वस्तु सौन्दर्य अछि।

मैथिली लिखिब छोड़ने नहि छी। मिथिला दर्शन मे कथा 'आकाशगंगा' छपल अछि। तोहर कथा वैदेही मे देखलहुँ अछि। वैदेही रेगुलरली नइँ अबइए। जनबरी मे एकटा मैथिली उपन्यास लिखब—"बटगमनी।" एकटा एहन युवती पर जे भरि जिनगी विभिन्न लोकक संगे पड़ाएल घुरइए। कथाक विस्तार जनकपुर सँ पुरनियाँ धरि रहत। आर सभ कुशल। कहिओ एक बेर कलकत्ता आबह। इति। राजकमल चौधरी।

पियारा बागान, पुरबा पुतियारी, कलकत्ता-३३

प्रिय हंसराज······अनुवादक विषय मे हमहूँ गप्प करब। 'आदि कथा' पठा चुकल छी, भेटल हएत अवश्य। "मैथिली की श्रेष्ठ कहानियाँ" प्रकाशित कतए सँ कए रहल छी? के छापत? कोना?

कलकत्ता आउ एकबेर। मुदा, सभ सँ बेसी आवश्यक जे जीवन कें व्यवस्थित करू। व्यवस्था नहि रहला सँ हमरे जकाँ जीवन विभिन्न प्रकारक ऊहापोह मे ओझरा जाएत आ अपन योग्यताक पूर्ण उपयोग नहि कए सकब। हम आइ भोर नवद्वीप जा रहल छी। सप्ताह भरि मे घुरि आएब। अहाँ हिन्दी मे लिखब आरम्भ करू आ क्लसिक्स त्यागि मोडर्न साहित्य पढ़ल करू। इति। राजकमल ६-१-६०

पियारा बागान, पुरबा पुतियारी, कलकत्ता-३३

प्रिय हंसराज, पत्र काल्हि भेटल अछि। 'चानो दाइ' बढ़िया वस्तु बहराएल अछि। ओकर समालोचना वैदेही मे तोरा लिखबाक चाही। 'दर्शन' मे तोरा रचनाक प्रतीक्षा अछि। विशेष की?

पियारा बागान पुरबा पुतियारी, कलकत्ता-३३

प्रिय हंसराज, उजान सँ आ कटिहार सँ दूटा पत्र भेटल। संग्रहक लेल

'सिटेस्ट' कहिआ धरि हमर रचना चाही ? उजान मे नागो सँ भेंट भेल छल ? की करइ छथि ? हमरो चर्चा कएलनि ? धीरेन्द्रक 'धीया पूता''क दर्शन नहि भेल अछि। कहबैन जे पत्रिका हमरा अवश्य पठाबथि। आर सभ कुशल। कोनो विशेष समाचार नहि। अहाँ अपन हिन्दी रचना पठाउ। प्रकाशनार्थं। अहींक राजकमल। २२। २

पियारा बागान, पुतियारी पूर्व कलकत्ता-३३

भाइ हंसराज, अनेक दिन सँ अहाँक पत्र नहि आएल छल। मैथिली कथा संग्रहक लेल अहाँ हमर कोनो पुरान रचना ललका पाग, अथवा फुलपरासवाली (वैदेही मे प्रकाशित) लए सकैत छी। नव रचना लिखनाइ हम त्यागिए देने छी। मिथिला-दर्शन, वैदेही, अभिव्यंजना कोनो सँ हमरा कोनो सम्पर्क नहि अछि। नहि राखब। पत्र देल करू। आर ? राजकमल १५-६-६०

पियारा बागान, पुतियारी पूर्व, कलकत्ता-३३

प्रिय हंसराज, संक्षिप्त पत्रक लेल क्षमा करब। (१) मैथिली की क्षेष्ठ कहानियाँक लेल 'कोपड़" लेल—धन्यवाद। (२) मैथिलीक उत्कष्ट कथा संग्रहक लेल हम नव रचना आ फ़ोटो पठा देब—निश्चय। (३) वैदेही, दर्शन, अभिव्यंजना, इजोत, धीयापूता, हम एहि सभ सँ असंपर्कित छी, आ रहय चाहैत छी। अहूँ हिन्दी मे आउ, यैह प्रार्थना हम करब। मैथिलीक मोह वेसी काल उचित नहि। (४) हम स्थायी रूप सँ कलकत्ता मे छी, नियम कएने छी जे पूव दिस जाएब, पश्चिम नहि जाएब। तेँ दरभंगा-पूर्णियाँक कोनो संभावना नहि। (५) यात्री आइ कलकत्ता सँ पटना गेलाह। दू पुस्तक "सतरंगे पंखोवाली" (कविता) आ "कुम्भीपाक" (उपन्यास) छपल छैन। आर सभ कुशले कुशल। राजकमल। २५-६-६०

राजकमल चौधरी, पियारा बागान, पुतियारी पूर्व, कलकत्ता-३३

हंसराज भाइ, पत्र भेटल।...—मात्र मैथिली मे लिखलासँ लाभ नहि। हिन्दी मे लिखब आवश्यक। वैदेही मे जे कथा (हमर) आएल अछि से हम

कृष्ण कान्त बाबूकें १९५१ मे देने छलिग्रनि । ग्रार ? राजकमल । २०-७-६०

पियारा बागान, पुतियारी पूर्व, कलकत्ता ३३

प्रिय भाइ, कटिहारक पतापर पहिलुक पत्रक उत्तर पठैने छी । 'मिथिला मिहिर'क दर्शन नइँ भेल ग्रछि ।

तिथि ८-९-६० कें शशि देवी एकटा कन्याक माय बनलीह । कन्या स्वस्थ छथि । ग्रार ? राजकमल २८ ९-६०

'६० दिसम्बरक ग्रन्तिम सप्ताह । राति दस बजैत । दरभंगा प्लाटफार्म । बुक ह्वीलर । राजकमल चौधरी । नरकटिग्रागंज सँ पहलेजाक गाड़ी । सेकेण्ड क्लास डिब्बा मे भरि राति गप्प करैत रहलहुँ राजकमल ग्रा हम ।......"मार्क्स पर विश्वास नहि हंसराज ! हमर ग्रास्था तँ फ्रायडक प्रति प्रबल भए गेल ग्रछि ।" ...जीवाक हेतु एकटा भ्रम चाही, भने ग्रो काल्पनिक, वरण कएल किएक नहि हो, ग्रोही मे लागल रहने जीवनक रस भेटत । हंसराज, हजार टा उदाहरण हम ग्रपन आँखि देखल कहैत छी...।"...मैथिलीक प्रति ग्रहाँक निष्ठा तेहन अछि जे हम कोनो तर्क नहि देब । मुदा, हम तँ मैथिली सँ सम्बन्ध-विच्छेद कएने छी । हंसराज, मोह व्यावहारिकताक बाधक थिक । विचार करू ।... अहाँ हमर मैथिली कथा समकें एकत्र कए दिग्र आ 'राजकमल: व्यक्तित्व ग्रो कृतित्व' निबन्ध लिखि दिग्र । प्रकाशक हम ताकि लेब ।" आ, महेन्द्रू घाटक पश्चात तीन दिन धरि साँझ-प्रात पटनाक होटल ग्रा बजार ।

राजकमल चौधरी, पुतियारी पूर्व, कलकत्ता-३३

प्रिय भाइ, पत्र पाबि ग्रनेक प्रसन्नता भेटल । स्वस्थ नहि रहैत छी ग्रारो कतेक विवशता घेरने रहैत अछि ।...मैथिली लिखबामे ग्राब बड़ ग्रसुविधा होइत ग्रछि । असुविधा ग्रा ग्रनिच्छा । तेँ मैथिली कथा नहि पठा पाएब । जँ बड़ ग्रावश्यक हो तँ कोनो हिन्दी कथाक अनुवाद करबा लिग्र । ग्रार की की कए रहल छी ? राजकमल २-८-६१

'६१ सँ '६३ क ग्रक्टूबरक मध्य पटनहि मे हमरा राजकमल सँ दू-तीन

बेर भेंट भेल। ओ कलकत्ता सँ दिल्ली जाइत-अबैत रहथि। '६३क 'मिथिला मिहिर'क कथा-अंक (१५-९-६३) मे प्रथम कथा हुनक प्रकाशित भेल "आवागमन" आ, प्रायः अक्तूबर मे ओ पटना आबि गेलाह। कलकत्ता छोड़ि चुकल छलाह। नवादा (गया) मे अस्थायी रूपेँ रहथि। तावतधरि हुनका कलकत्ताक मोह नहि गेल रहन्हि। किन्तु, पटना मे सबसँ पहिने ओ 'नवराष्ट्र' सँ सम्बद्ध भेलाह, आ, तकर बाद 'भारत-मेल'। चीनी कोठी फ्लैट मे वासा रहन्हि। "माहुर" (कथा, २६-१-६४) आ पनिडुब्बी (कथा, १८-५ ६४) आ "या निशा सर्वभूताणाम्..." (कविता, १२-३-६४) "मिहिर" मे प्रकाशित भेलन्हि। एहि बीच हुनक पत्नी एक बेर नवादा सँ पटना आबि केँ चल गेल रहथिन्ह। "कंकावती '६४'क रचना ओतहि कएलन्हि।

हम बीच बीच मे लक्ष्य करए लागल रही जे ओ स्वस्थ नहि छथि। जिज्ञासा कएलासँ गप्प टारि देथि आ गाँजा पीबथि जाहिसँ तत्काल हुनक पेटक दर्द कम भए जाइन्हि।

आ, तकरा बाद ओ अपन पारिवारिक जीवन बितएबाक हेतु डेरा भिखना-पहाड़ी (दक्षिण) लए गेलाह। '६४क नवम्बर सँ '६७क अप्रैल धरि मे हुनक कथा "सुरमा सगुन विचारै ना (९-५-६५) पात (१२-९-६५) घड़ी (१९-१२।६५) माँछ (३०-१-६६) साँझक गाछ (१३-३-६६) समुद्र (११-९-६६) परम प्रिये निरमोही बालम हमार प्रानपती (३०-१०-६६) आ, बहिनदाइ, अस्पताल, वनगाम आ कोनो एकटा सपना (३०-६-६७) अन्तिम प्रकाशित कथा); कविता। वयः सन्धि (८-११-६४) तीनटा कविता (२९-११-६४) वासन्ती परकीया-विलास (४-४-६५) तीनटा कविता (१०-१०-६५) पाँचटा मैथिल-दृश्य (५-१२-६५) महावन (२७-२-६६) दूटा कविता (५-६-६६) एहि जंगल सँ ओहि जंगल बताह महादेव जकाँ (२१-८-६६) आगत वसनाक प्रति दूटा प्रेम कविता (१९-१-६७) आ गामक नामक नाम थिक पुरवा वसात, पछवा वसात (१९-४-६७ अन्तिम प्रकाशित कविता) आ, निबन्ध, कथा-समाप्रिक विघटन आ समस्या (६-६-६५) आ "हमरालोकनिक युग आ

आधुनिक मैथिली कविता (२६-८-६५) मिथिला मिथिर मे प्रकाशित भेल छल। "माहुर" छपल छल। ओहि सप्ताह राजकमल "मिहिर" कार्यालय अएलाह। श्री मोहन जी (श्री उपेन्द्र ठाकुर "मोहन" उप-सम्पादक, मिथिला मिहिर) हुनका पुछलथिन्ह—राजकमल जी ! एकटा हमरा जिज्ञासा अछि। माहुर मे भावहु आ भँसुरक वीच की अनुचित सम्बन्ध छैक ?"

राजकमल जीह कुचैत उत्तर देलथिन्ह—"नारायण, एहन पापी जुनि बूझू।"

आ, ओकरे किछु क्षणक बाद हम हुनका पुछलिऐन्हि—"भाई, अहाँ मोहन जी केँ एजा किएक उत्तर देलिऐन्हि ?"

—'तोँ नहि जनैत छह। ओ बूढ़लोक छथि। हुनका दुःख होइतन्हि। तेँ एना कहलिऐन्हि।

'६५क अक्तूबर मे राजकमल अस्वस्थ भएकेँ सबसँ पहिने पटनाक आयुर्वेदिक अस्पताल मे भर्ती भेलाह। समाचार सुनतहि श्री शेखर जी (श्री सुधांशु शेखर चौधरी, सम्पादक, मिथिला मिहिर) आ हम गेलहुँ।

राजकमल पेट मे एकटा गोला जकाँ बुझि पड़ल बिस पँघ आ सक्कत। अन्य औषधक अतिरिक्त गायक गोँत आ गायक दूध आहार। बैद्यजीक कथ्य जे गायक गोँत जतेक परिणाम मे पीबि सकी से नीक। जतेक गायक गोँत उपलब्ध भए सकए, रालकमल निर्विकार पीबि जाथि। आ, ओही क्रम मे ओ हमरा एक दिन कहलन्हि,—हंसराज, हमरा जीवाक अछि आ जीबाक हेतु हम सब किछु करैत आएल छी, आ करबा हमरा जीवाक अहि। हम जीयब।"

'६६क फरबरीक प्रायः अन्तिम सप्ताह। श्री यात्री जी अएलाह। बड़ उदास स्वर मे ओ कहलन्हि—"राजकमलक स्थिति बड़ अघलाह छैक। राजेन्द्र सर्जिकलक "ई" वार्ड मे भर्त्ती कए देल गेलैक अछि। एकटा आपरेशन भेल छैक।……बड़ यन्त्रणा !

आपरेशनक बाद थहाथहि साहित्यकारक बीच राजकमलक आकृति पड़ल छल। अस्त-व्यस्त केश। बढ़ल दाढ़ी। घसल आँखि। रहि रहि आँखि खुजैत बन्द होइत। हम एक कात ठाढ़ छलहुँ। हमर बकार बन्द छल। शरीर निश्चल आ मन उद्विग्न, चिन्तित आ भयभीत !

—"बाजै नै किए छह ? बाजै नै किए छह ?......की ताकै छह ?...... बाजै नै किए छह—....?" राजकमल रहि रहि हमरा ताकि ताकि बाजथि, बाजथि नहि, बड़बड़ाथि। तैओ हमर बकार नहि खुजल आने ताकब रूकल।

राजकमलक स्थिति मे क्रमशः सुधार होबए लगलन्हि। ओ डेरा पर जाए कें यात्रा-फेर कए अएलाह। "जेनरल वार्ड" सँ एक स्वतंत्र (आर० एस०) कोठली दए देल गेलन्हि। अपन शारीरिक सुधारक प्रसंग ओ पुछलन्हि तँ हम उत्तर देने रहिऐन्हि—पटना मे एहन स्वास्थ्य अहाँ कें कहिओ नहि छल।" ओ प्रसन्न भेलाह। आ, हम बराबरि जाए लगलहुँ।

फरबरी सँ अगस्त धरि ओ अस्पताल मे रहलाह। एहि बीचक गप्पक चर्चा नहि करब। तीन तीन चारि चारि घण्टा धरि बराबरि विभिन्न समस्या आ विषय पर हमरा दुनू गोटेक मध्य गप्प होइत छल। कतेक योजना बनल छल आ, सबक बीच मे छल, राजकमल स्वास्थ्य-लाभ करथु, तँ योजना कार्यान्वित हो।

प्रायः मई-जून '६६क कोनो सन्ध्या। हमर अतिरिक्त आर दू चारि व्यक्ति राजकमलक कोठली मे। तावत अएलाह आशुतोष सिंह ठाकुर। कागत मे लपेटल कोनो पोथी। राजकमल कें ओ देलन्हि आ धन्यवाद पओलन्हि। सब चल गेल। हमहुँ बिदा भेलहुँ।

—"हंसराज, हम चण्डी-पाठ करए चाहैत छी। आशु सँ पोथी मङाओल अछि। की.....?"

—"नीक बात। हमरालोकनि तँ शक्तिक उपासक छी।"

ऊपर मे षट्कोण। राजकमल चौधरी, ई० वार्ड (आर० एस० रूम) राजेन्द्र सर्जिकल अस्पताल, पटना-४।

कतेक दिन सँ भेँट नहि भेल। एना बिसरल उचित नहि हैत। पछिला अंक (जाहि मे हमर कविता, पत्र छल) वासापर सँ कियो सज्जन उठा लेलनि। हमरा देखबाक अवसर नहि भेल। कृपया उक्त अंक उपलब्ध कय, कोनो साँझ अवश्य आउ। मोन लागल अछि।

आदरणीय रमानाथ बाबू दरभंगे छथि? हुनका सेवा मे एकटा पत्र (कुशल आदि) लिखबाक इच्छा अछि। राजकमल। १४-६-६६

'६६क जूनक अन्तिम अथवा जुलाइक प्रथम सप्ताह। राजेन्द्र सर्जिकल अस्पतालक "ई" वार्डक आर० एस० रूम। राजकमल अपन 'बेड' पर आ रमानाथ बाबू, श्री दीना नाथ झा (सम्पनि, सम्प्रादक, दि इण्डियन नेशन) आ, हम बैसल छलहुँ। राजकमलक स्थास्थ्यक संग गप्प तन्त्र दिस चल गेल। गप्पक अन्तिम परिणति भेल जे रमानाथ बाबू राजकमल केँ मन्त्रक दीक्षा दए देथु। हमरा लोकनि अवाक्। रमानाथ बाबूक कथ्य जे ओ माए, बाप, सासु, पितिआनि एहने सन कोनो आदरणीय श्रेष्ठ सँ दीक्षा लेथु। ओ अपना केँ तन्त्रक साधक नहि मानथि। तन्त्रशास्त्रक ज्ञाता भले छथि मुदा तन्त्र तँ साधनाक विषय थिक। मुदा, राजकमलक आग्रह पराकाष्ठा पर छल। अन्त मे रमानाथ बाबू कहलथिन्ह—"अहाँ गाम जाउ। उग्रताराक सेवा करू। हमहुँ हुनक दर्शन कए आएल छी। ओएह अहाँ केँ त्राण करतीह।"

"श्री राजकमल जी सँ पुनः भेँट नहि कए सकलिऐन्हि। यदि दीक्षाक प्रबन्ध नहि भेल होइन्ह तँ भरि मलमास आब छोड़ि देथु। प्रणव मन्त्र ओ तँ गुरु सँ भेटले छैन्हि। ओकरे जप करथु—माला वर्णमाला—एकटा "कवच" यदि चाहथि तँ हम लीखिकेँ पठाए दिऐन्हि। चारि सए बत्तीस बेरि पाठ करथि—छोट कवच छैक।" उपरिलिखित पंक्ति रमानाथ बाबूक पत्र (१-८-६६) क अंश थिक जे ओ हमरा राजकमल सँ एहि प्रसंग गप्प करी, लिखने छथि।

राजकमल चौधरी, महिसी, सहरसा।

प्रिय हंसराज, अहाँ कत्तऽ छी ? की कऽ रहल छी ? कत्तेक दिन सँ ने कोनो समाचार आने मिथिला मिहिरक कोनो अंक भेटल अछि। हमर कथा "प्रिय प्राणेश्वर" छपल छल की ? आ कविता सभ ? कृपया मिहिरक फ्रीलिस्ट मे हमर पटनाक पता बदलि कय गायक पता लिखबा दिअ। मिहिर देखबाक उत्सुकता रहैत अछि। कृपया पत्र लिखू। अप्पन हाल समाचार कहू। सप्रेम। राजकमल। ३०-१२-६६

राजकमल चौधरी, महिसी, सहरसा।

प्रिय हंसराज, कतेक दिन सँ अहाँक कोनो समाचार नहि। की हाल चाल ? एकटा कविता पठा रहल छी। उपयोग करब। गत १० जनबरी कें हमर पिता स्वर्गवासी भेलाह। श्राद्ध-कर्म आ परिवारक व्यवस्था मे व्यस्त छलहुँ। आबहु अवकाश नहि भेल अछि। गाम सँ बहरएबाक स्थिति नहि अछि। अधिक संभव, आब स्थायी रूप सँ अहीठाम रहब।

अहाँक व्यक्तिगत आ साहित्यिक योजना सभ कोना गतिशील अछि ? आदरणीय रमानाथ बाबूक एकटा पत्र आयल छल। ओ हमर कथा-संग्रह अपन प्रकाशन सँ आनय चाहैत छथि। की अहाँ वैदेही, मिथिला-दर्शन आ 'मिहिर'क फाइल सँ हमर प्रकाशित कथा सभ संग्रह नहि कय देब ? ई भार अहीं पर दैत छी। सप्रेम। राजकमल। २/२/६७

राजकमल चौधरी, महिसी, सहरसा

प्रिय हंसराज, हम १५/५ कें पटना गेल छलहुँ। ओहीठाम १७/५ कें बीमार पड़ि गेलहुँ। तही हालत मे २२/५ कें गाम चल अयलहुँ। एखन धरि बीमारे छी। १०२°-१०३° रहैत अछि। अवस्था नीक नहि। जँ धीरेन्द्र (जनकपुर) पटना आयल होथि तँ हुनका हमर ई सभ समाचार कहबनि। हमरा हुनका सँ भेंट करबाक वचन छल। मुदा, एहि बीमारी मे पटना आयब असंभव। अपन हाल लिखब। मिथिला मिहिरक अंक नहि भेटि रहल अछि। की कारण ? पत्र देब। राजकमल। २/६/६७

आ, हम एकटा नितान्त व्यक्तिगत काजेँ किछु दिनक निमित्त कटिहार चल गेलहुँ आ राजकमल केँ लिखलिऐन्हि जे हम महिसी आबि रहल छी।

१९-६क सन्ध्या। कटिहारक एकटा पोथीक दोकान। आर्यावर्त मे प्रकाशित देखलहुँ जे राजकमल अस्वस्थ भए पटनाक राजेन्द्र सर्जिकल अस्पताल मे भर्ती छथि। बड़ चिन्तित भेलहुँ। महिसी जएबाक विचार भंग भए गेल। मन मे नाना प्रकारक भावना चलए लागल। उद्विग्न जकाँ बुझना जाए।

ओहि सन्ध्या गरम बड़ रहैक। मच्छड़क उपद्रव। तेँ एकटा तक्थपोश पर हमरालोकनि मैदान मे अन्हार साँझक सुख लैत रही। आगाँ मे ट्रांजिस्टर। आकाशवाणी सँ वज्र सन कथा सुनना गेल। राजकमल चौधरीक देहान्त आइ प्रातः। इच्छा भेल जे ट्रांजिस्टर उठाएकेँ पटकि दी आ अपने निच्छोह दोड़ैत पड़ाए जाइ। मुदा, बैसले रहलहुँ। लग मे बैसल मित्रवर्ग चुप्पे रहलाह। ट्रांजिस्टर बन्द कए देल गेल। तकर बाद अढ़ाए-तीन घण्टा धरि बकार नहि बहराएल।

खाए बैसलहुँ तँ रोटी तीत लागल। ऊठि गेलहुँ। हमर प्रिय मित्र श्री देवनाथ मिश्र कहलन्हि,—"सुनह, एना भावुकता मे भसिआएब अनुचित थिक। तोँही हमरा कतेक बेर कहने छह।'

—"हमर जीवन मे कतोक एहन वस्तु अछि जे हमरा बिसरल नहि जाइत अछि। ने हमर कटिहार बिसरि सकैत छी आने फूल बाबू केँ आ, से जखन एकट्ठा भए गेल ···।"

हमर जेठ भाइक मृत्यु हमर आँखिक सोझाँ भेल छलन्हि। हमर मुँह सँ ने एकटा बकार बहार भेल ने आँखि सँ नोर खसल। अपन छोट भाइक मृत्यु देखने छी; ओहिना मूर्तिवत्। मुदा जानि नहि फूल बाबूक मृत्युक समाचार सुनि हम अनुभव कएलहुँ जे हम नाङर भए गेल छी। चौदह वर्षक सम्बन्धक कल्पना। मासक मास हुनक रोगशय्याक कात मे बैसल छी।

कतेक स्वांग रचने छी। से, फूल बाबूक चिता पर हम पाँचटा काठी नहि चढ़ाए सकलहुं कारण, कटिहार मे छी। आँखि मे नोर ढबकि आएल। मैथिली-साहित्य-काननक एकटा फूल चौदह वर्षधरि पुष्पित, सुरभित रहल आ अकालहि काल कवलित भेल। कटिहारक संस्मरण आ फूल बाबू—हमरा जीवन भरि बिसरल नहि जाएत, एतबाधरि विश्वास करू। हम हुनका पर एको पाँती नहि लिखि पाएब।

अप्रैल, '६८ (पटना)